

महिलाओं में मातृत्व की समस्याएँ तथा उसका निदान

डॉ. शिल्पी शिवानी

स्वास्थ्य मनुष्य का मूलभूत अधिकार है और मनुष्य का स्वस्थ रहना समाज के हित में है। स्वास्थ्य एवं व्यक्ति का विकास किसी भी राष्ट्र के सामाजिक व आर्थिक विकास का अभिन्न अंग होता है। स्वास्थ्य का अर्थ केवल यह नहीं है कि मनुष्य को रोग, बीमारी और अपंगता न हो। स्वास्थ्य का अर्थ यह है कि मनुष्य शारीरिक, मानसिक और सामाजिक दृष्टि से पूर्णतः स्वस्थ हो। सृष्टि की रचना के समय पृथ्वी पर स्त्री और पुरुष को साथ रखा गया। यह प्रकृति का नियम है। इसलिए प्रत्येक जीवित प्राणी में नर और मादा पाये जाते हैं। इन नर व मादा के प्रजनन अंगों की रचना ईश्वर ने इस प्रकार की है कि गर्भाधान की क्रिया द्वारा एक जीव को जन्म दिया जाता है। पुरुष एवं स्त्री के प्रजनन अंगों की संरचना एवं कार्यो में अंतर पाया जाता है। संतानोत्पत्ति का मुख्य आधार शुक्राणु तथा अण्डाणु का संयोग होना है। गर्भाधान के उपरांत भ्रूण के शरीर की अभिवृद्धि माता की रक्त-कोशिकाओं के द्वारा होती है। एक सफल गर्भाधान के साथ हर गर्भवती स्त्री को इस अवस्था में उत्पन्न होने वाली समस्याओं और उसके निदान तथा गर्भस्थ संतान के विकास को पूर्णतः ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। उसकी जरा-सी असावधानी उसके या विकासशील गर्भ के लिए खतरा उत्पन्न कर सकती हैं। शारीरिक स्वास्थ्य का यों तो हर समय ध्यान रखना चाहिए, किंतु गर्भावस्था में आहार-विहार में संयम तथा संतुलन रखना अनिवार्य होता है।